संपादकीय

ज्ञानपीठ के बहाने

हाल ही में अयोध्या के रामलल्ला के दर्शन कर आयी। मन को सकुन मिला। उन्हीं दिनों सोशल मीडिया पर विद्वान जगद्गुरु रामभद्राचार्य के कई साक्षात्कार टी.वी. तथा मीडिया पर देख सुन रही थी। लगभग उसी दौरान यतीन्द्र मिश्र की लिखी गुलज़ार साब की जीवनी 'गुलज़ार साब- हज़ारों राहें मुड के देखें' पुस्तक की चर्चा हो रही थी। दोनों अलग अलग बातें पर एक साथ सोशल मीडिया पर काफी छायी हुई थीं। मन के किसी कोने में इस पर कुछ अधपका सा चल रहा था कि तभी 17 फरवरी 2024 को साल 2023 के लिए दो भाषाओं के प्रतिष्ठित लेखकों को ज्ञानपीठ पुरस्कार देने का फैसला ज्ञानपीठ चयन समिति की ओर से लिया गया है और इसके लिए प्रसिद्ध उर्दू साहित्यकार गुलजार और संस्कृत साहित्यकार जगद्गुरु रामभद्राचार्य को चयनित किया गया है।' यह सुखद समाचार पर भी मीडिया के हर माध्यम से प्रसारित हो रहा था। यह एक सुखद समाचार था।

ज्ञानपीठ पुरस्कारों की घोषणा होते ही सभी का ध्यान देश के एक ऐसे संत की ओर मुड़ गया जिसकी प्रतिभा के कायल देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी भी हैं। स्वामी रामभद्राचार्य महाराज चित्रकूट के तुलसीपीठाधीश्वर हैं। एक उच्चकोटि के साधक और संत होने के साथ-साथ वे संस्कृत साहित्य के मूर्धन्य कवि एवं साहित्यकार भी हैं। उन्होंने श्री भार्गवराघवीयम् और गीतरामायणम् जैसे उत्कृष्ट महाकाव्यों की रचना की है। वे बचपन से ही मन की आखों से देख रहे हैं और ज्ञान की कलम से रच रहे हैं।

स्वामी रामभद्राचार्य जी को यह सम्मान उनकी विद्वता और को रेखांकित करते हुए दिया गया है। उनकी रचनाओं में कविताएं, नाटक, शोध-निबंध, टीकाएं, प्रवचन और खुद के ग्रंथों पर स्वयं सृजित संगीतबद्ध प्रस्तुतियां शामिल हैं, वे सौ से अधिक साहित्यिक कृतियों की रचना कर चुके हैं, जिनमें प्रकाशित पुस्तकें और अप्रकाशित पांडुलिपियां, चार महाकाव्य, तुलसीदास रचित रामचरितमानस पर एक हिंदी भाष्य, अष्टाध्यायी पर पद्यरूप में संस्कृत

भाष्य और प्रस्थानत्रयी शास्त्रों पर संस्कृत टीकाएं शामिल हैं। उनकी रचनाओं के अनेक ऑडियो और विडियो भी जारी हो चुके हैं। वे संस्कृत, हिंदी अवधि, मैथिली और कई दूसरी भाषाओं में लिखते हैं।

श्रीभार्गवराघवीयम् उनकी बेहद लोकप्रिय रचना है जिसके लिए उन्हें संस्कृत साहित्य अकादमी पुरस्कार समेत अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। उन्हें महाकवि तथा कविकुलरत्न आदि अनेक साहित्यिक उपाधियों से भी अलंकृत किया जा चुका है। रामानन्द संप्रदाय में प्रस्थानत्रयी पर संस्कृत टीका प्रस्तुत करने वाले रामभद्राचार्य द्वितीय आचार्य हैं। ज्ञानपीठ से किया गया उनका निश्चित ही प्रशंसनीय है।

नब्बे वर्ष के लोकप्रिय शायर गुलज़ार को ज्ञानपीठ पुरस्कार मिलना मन को खुश कर गया। गुलजार का नाम संपूर्ण सिंह कालरा है। उनका जन्म वर्ष 1934 में पाकिस्तान के दीना में हुआ था। उनके पिता का नाम **माखन सिंह कालरा** तथा उनकी माता का नाम **सुजान कौर** था। गुलज़ार अपने पिता की दूसरी पत्नी की इकलौती संतान हैं। बचपन गुलजार में ही उनकी माँ का देहांत हो गया। देश के विभाजन के वक्त उनका परिवार पंजाब के अमृतसर में आकर बस गया। वहीं गुलज़ार साहब मुंबई चले आए। मुंबई आकर उन्होंने एक गैरेज में बतौर मैकेनिक का करना शुरू कर दिया।

वह खाली समय में शौकिया तौर पर कवितायें लिखने लगे। इसके बाद उन्होंने गैरेज का काम छोड़ हिंदी सिनेमा के मशहूर निर्देशक **बिमल राय, हृषिकेश मुख़र्जी** और **हेमंत कुमार** के सहायक के रूप में काम करने लगे। उनका विवाह अभिनेत्री **राखी गुलजार** के साथ हुआ था। लेकिन उनकी बेटी के जन्म के बाद वे अलग हो गए थे। लेकिन गुलजार साहब और राखी ने कभी भी एक-दूसरे से तलाक नहीं लिया। उनकी एक बेटी का नाम **मेघना गुलजार** हैं, जोकि एक फिल्म निर्देशक हैं।

उन्होंने अपने करियर की शुरुआत मशहूर निर्देशक बिमल रॉय और हृषिकेश मुखर्जी के सहायक के रूप में की थी, और गीतकार के रूप में बिमल रॉय की फिल्म बंदिनी से की। हालाँकि उनकी पहली फिल्म काबुली वाला थी। उनके बाद सन्नाटा, बीवी और मकान, दो दूनी चार और खामोशी जैसी फिल्में आईं।

गुलज़ार को व्यावसायिक कला में उत्कृष्टता के लिए वर्ष 2009 में फ़िल्म 'स्लमडॉग मिलियनेयर' में उनके गीत 'जय हो' को ऑस्कर पुरस्कार से सम्मानित किया गया। भारतीय सिनेमा में उनके योगदान को देखते हुए वर्ष 2004 में उन्हें देश के तीसरे बड़े नागरिक सम्मान पद्मभूषण से भी सम्मानित किया गया।इसके अतिरिक्त गुलज़ार को वर्ष 2002 में 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' भी मिल चुका है। क़रीब चार दशकों से भारतीय सिने प्रेमियों को अपने गीतों का दीवाना बनाने वाले मशहूर गीतकार गुलज़ार को वर्ष 2013 के लिए दादा साहब फाल्के पुरस्कार दिया गया है। गुलजार यह सम्मान पाने वाले 45वीं शख्सियत हैं। इसके अतिरिक्त उन्हें 1977, 1979, 1980, 1983, 1988, 1991,1998, 2002, 2005 आदि में सर्वश्रेष्ठ गीतकार का फ़िल्मफ़ेयर पुरस्कार भी मिल चुका है।

एक संवेदनशील गीतकार के रूप में पहचान मिलने के बाद, उन्होंने फिल्मों के लिए स्क्रिप्ट और कहानियां लिखना शुरू कर दिया। फिर 1971 में वे एक निर्देशक की भूमिका में आ गये। अपने चालीस साल के करियर में गुलज़ार ने लगभग साठ फिल्मों के लिए कहानियाँ लिखी हैं और सत्रह फिल्मों का निर्देशन किया है, जिनमें से प्रत्येक कृति उत्कृष्ट है। 1980 के दशक के दौरान उन्होंने छोटे पर्दे के लिए सबसे उत्कृष्ट कार्यों में से एक, मिर्ज़ा ग़ालिब नामक धारावाहिक में काम किया, जो महान कवि को श्रद्धांजलि थी। 1996 में गुलज़ार ने पंजाब में आतंकवाद पर एक दस्तावेज़ के रूप में माचिस का निर्माण किया।

गुलजार की अब तक की सबसे खास भूमिका गीतकार के रूप में रही है। उन्होंने एक गीतकार के रूप में बॉलीवुड के सबसे प्रतिभाशाली लोगों जैसे आर.डी बर्मन, ए.आर. रहमान, एस.डी. बर्मन, मदन मोहन, लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल, राजेश रोशन, शंकर जयकिशन, सलिल चौधरी आदि के साथ काम किया है। मिर्जा गालिब के अलावा, उन्होंने तहरीर मुंशी प्रेमचंद की जैसी अन्य टेलीविजन श्रृंखलाओं में काम किया है और दूरदर्शन के धारावाहिकों जैसे जंगल बुक के लिए गीत लिखे हैं। उन्होंने टेलीविजन पर कई बच्चों की श्रृंखलाओं के लिए संवाद लिखे, जैसे एलिस इन वंडरलैंड, गुच्चे, पोटली बाबा की, आदि।

गुलज़ार ने आशीर्वाद, आनंद, खामोशी आदि फिल्मों के लिए संवाद और पटकथाएँ लिखी थीं। उनकी पहली निर्देशित फिल्म 'मेरे अपने' थी। फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर काफी अच्छा प्रदर्शन किया था। उन्होंने अपने निर्देशन का सिलसिला जारी रखा और परिचय, कोशिश, अचानक, आंधी, खुशबू, मौसम, अंगूर आदि जैसी फिल्मों का निर्देशन किया। गुलज़ार की 'आंधी' कमलेश्वर के 'काली आंधी' उपन्यास का रूपांतरण थी। इस फिल्म को भारत में काफी सराहना मिली और इसने सर्वश्रेष्ठ फिल्म श्रेणी के लिए फिल्मफेयर क्रिटिक्स अवॉर्ड जीता।

गुलज़ार एक लब्धप्रतिष्ठ शायर, कहानीकार और फिल्मकार के रूप में स्थापित हैं। वे लिखते उर्दू में ही हैं, पर ज्यादातर लोग उनसे देवनागरी के माध्यम से ही रूबरू होते हैं। गुलज़ार की शुरुआती रचनाएं थोड़ी रोमांटिक, थोड़ी नॉस्टैल्जिक हैं। उनकी नज्मों के संग्रह उर्दू में 'जानम' और फिर हिंदी में 'एक बूँद चाँद' के शीर्षक से प्रकाशित हैं। कहानियों का पहला संग्रह 'चौरस रात' आया, जिसमें ज़्यादातर कहानियाँ लंबी नहीं थी। पत्र पत्रिकाओं में गुलज़ार की रचनाएँ पाठकों के दिलों को छूती गयीं। उर्दू रिसालों में तो वे छाए हुए थे, वरिष्ठ संपादक धर्मवीर भारती 'धर्मयुग' के लिए उनकी रचनाएँ अक्सर चुनते रहे। उनकी कई किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनमें महत्वपूर्ण हैं, कुछ और नज़्में; दस्तख़त; पुखराज; साइलेंसेज; और कहानी संग्रह- धुआँ (हिंदी में 'रावी पार')। शिल्प के स्तर पर उनका एक अद्भुत प्रयोग था 'त्रिवेणी'। सारिका में प्रकाशित इस नए फॉर्म 'त्रिवेणी' के आकर्षण में एक बड़ा पाठक समूह शामिल हो गुलज़ार को जान पाया। 2002 में एक महत्वपूर्ण किताब आई 'रात पश्मीने की'। साहित्यिक जगत में गुलज़ार की अपनी शैली उनकी नज़्मों के विषयों का एक बड़ा कैनवास लोगों के सामने आया। उनका पाठक वर्ग विस्तृत होता चला गया।

उन दिनों गुलज़ार फिल्मकार के रूप में एक अलग ऊँचाई पा चुके थे। वे एक साथ गीतकार, पटकथा लेखक, संवाद लेखक और निर्देशक हैं। मुश्किल यह थी कि फिल्मकार गुलज़ार की चकाचौंध में आलोचकों को साहित्यकार गुलज़ार कभी-कभी नहीं दिखते थे। हालांकि यह

सब मानते हैं कि उनके फिल्मी गीतों में भी जो काव्यतत्व है, जो कविता है, वह अपने आप में एक ऐसी साहित्यिक ऊंचाई है जिस देखते हुए गुलज़ार को 'सतरंगा' कवि कहा जाता है। गुलज़ार अपनी उम्र के नौवें दशक में भी कला और साहित्य की प्रासंगिकता का अर्थ अनवरत तलाश रहे हैं- बिंबो के विपुल संसार को गढ़, शिल्प के जाने अनजाने रास्तों पर चल, और सबसे बढ़कर सृजन यात्रा में लगातार आगे बढ़े।

आज जब गुलज़ार को ज्ञानपीठ से नवाजा गया है तो ज़ाहिर है मूलत: साहित्यकार के रूप में उनकी पहचान को स्वीकारा गया है। गुलजार साहब को ज्ञानपीठ पुरस्कार देने की घोषणा हुई तो इस पर मिली-जुली प्रतिक्रियाएं स्वाभाविक थीं। 'गीतकार गुलजार को उर्दू के लिए ज्ञानपीठ' दिया गया है। इसमें 'गीतकार' शब्द महत्वपूर्ण है। पहली बार भारत के किसी सिनेमा लेखक को चुना गया है और बाकायदा 'गीतकार' संबोधित करके दिया है। जो हो पर सुखद है।

'आखर परिवार' इन दोनों महानुभावों को अपनी अशेष शुभकामना देता है।

इति नमस्कारन्ते!

प्रो. प्रतिभा मुदलियार

प्रधान संपादक